अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

मृणाल पाण्डे के कहानी साहित्य में समकालीन यथार्थ

कु० जया पाण्डेय

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, दिग्विजयनाथ स्तानकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध समकालीन हिन्दी कथा साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाकार मृणाल पाण्डे के कथा संसार में निहित समकालीन यथार्थ का विस्तृत, विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। मृणाल पाण्डे की कहानियाँ आधुनिक भारतीय समाज की आंतरिक संरचनाओं, मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, स्त्री-पुरुष संबंधों, सत्ता और शोषण की सूक्ष्म प्रक्रियाओं तथा परम्परा और आधुनिकता के अंतर्विरोधों को गहराई से अभिव्यक्त करती है। मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य केवल स्त्री विमर्श तक सीमित नहीं है, बल्कि एक समग्र सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज है। सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ के बहुस्तरीय चित्रण के माध्यम से उनकी कथाएँ पाठक को आत्ममंथन और सामाजिक चेतना की ओर प्रेरित करती है।

मुख्य शब्द – मृणाल पाण्डे, कथा साहित्य, समकालीन यथार्थ, स्त्री चेतना, मध्य वर्ग, समकालीन जीवन, सामाजिक संरचना।

हिन्दी कथा साहित्य में समकालीन यथार्थ का विशेष महत्व रहा है। हिन्दी कथा साहित्य में समकालीन सामाजिक यथार्थ का चित्रण साहित्य की जीवंतता और प्रासंगिकता को बनाएं रखने का प्रमुख माध्यम रहा है। साहित्य अपने समय के समाज, उसकी चेतना, समस्याओं, और अंतर्विरोधओं को अभिव्यक्ति करता है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में तीव्र सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन हुए- शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, स्त्री चेतना का विकास, उपभोक्ता और सत्ता – संरचनाओं का विस्तार। इस परिवर्तनों ने समकालीन सामाजिक यथार्थ को जटिल और बहुआयामी बना दिया है।

मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य इसी समकालीन यथार्थ से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी कहानियाँ आज के बदलते समाज की संवेदनशील नब्ज पर हाथ रखती है। वे आधुनिकता के दावों के पीछे छिपी असमानताओं, स्त्री के सूक्ष्म रूपों को उजागर करती है। इस दृष्टि से मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य समकालीन सामाजिक यथार्थ का सशक्त और प्रामाणिक दस्तावेज है।

समकालीन यथार्थ का अर्थ केवल वर्तमान घटनाओं का चित्रण नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त वास्तविक जीवन स्थितियों, समस्याओं, संघर्षों और संरचनाओं के सच्चे चित्रण से है। यह यथार्थ स्थिर नहीं होता, बल्कि निरन्तर परिवर्तनशील होता है। मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में समकालीन यथार्थ का संबंध स्त्री जीवन, पारिवारिक तनाव, सामाजिक असमानता, सत्ता के दबाव और आधुनिकता की चुनौतियों से जुड़ा हुआ है। उनके लिए यथार्थ केवल वाह्य घटनाओं का चित्रण नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक द्वन्दों और मानसिक संघर्षों की अभिव्यक्ति भी है।

मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में समाज का बहुआयामी चित्रण मिलता है। उनके पात्र सामान्य जीवन से लिए गए हैं, जो रोजमर्रा की समस्याओं से जूझते हुए दिखाई देते हैं। ये पात्र किसी आदर्श संसार के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि वास्तविक समाज की उपज हैं। उनके कथा संसार में स्त्री केवल पीड़िता नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मचेतस् प्राणी के रूप में उभरती है। मृणाल पाण्डे का कथा संसार समकालीन समाज की वास्तविकताओं का सजीव दस्तावेज है। मृणाल पाण्डे का यथार्थ जीवन के सूक्ष्म अनुभवों से निर्मित है। वे बड़े सामाजिक नारों के स्थान पर छोटे-छोटे प्रसंगों, संबंधों और मनोवैज्ञानिक स्थितियों के माध्यम से समकालीन यथार्थ को सामने लाती है।

मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य मे स्त्री जीवन समकालीन यथार्थ का सबसे सशक्त और केन्द्रीय पक्ष है। उनकी स्त्रीपात्र न तो पारंपरिक अर्थों में आदर्श नारी है और न ही केवल पीड़िता। वे सामाजिक परिस्थितियों से जूझती हुई, सोचती, समझती और निर्णय लेने का प्रयास करती हुई स्त्रियाँ हैं। उनकी कहानियों में विवाह संस्था के भीतर स्त्री की स्थिति, पारिवारिक अपेक्षाएँ, भावनात्मक उपेक्षा और असमान सत्ता-संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। 'एक नीच ट्रैजेडी', 'हमसफर', 'सुपारीफुआ', 'रिक्ति', 'दरम्यान', 'गर्मियाँ', 'उमेश जी', 'चिमगादड़े', 'लड़कियाँ' और 'एक थी हँसुमुख दे', आदि कहानियों में स्त्री के दोनों रूपों का चित्रण मिलता है। जहाँ एक ओर वह धर्म, शर्म और समर्पण की बेड़ियों में जकड़ी हुई अपने आप को स्वीकार कर लेती है तो वहीं दूसरी और उस जकड़न को तोड़ने का वह भरपूर प्रयास करती हुई दिखाई देती है। जहाँ एक ओर विवाह के बंधन में बंध कर स्वयं के अस्तित्व को भूलकर दूसरों की इच्छानुसार ढलने वाली शांता का चित्रण है – **"एकदम सपाट और आयामहीन औरत जिसे खड़ी कर दो तो खड़ी हो जाएगी, धक्का दे दो तो लद्द से गिर पड़ेगी। न तो उससे बात की जा सकती है और न ही तर्क या झगड़ा। ..... शायद उसने अपनी अनुभूतियों और चेतन-तंतुओं को ऐसा भीतर सिकोड़ लिया है कि आदर-अपमान दुःख – सुख किसी का भी उस पर असर नहीं होता। ..... पति के चिल्लाने – खखारने के साथ दिन शुरू होता है और उसी के खर्राटों के साथ खत्म।"**[1] तो वहीं दूसरी ओर प्रश्न उठाने वाली स्त्री का भी चित्रण मिलता है 'एक थी हँसमुख दे' कहानी में राजकुमारी स्त्री,

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

विरोधी मानसिकता के प्रति अपना विरोध व्यक्त करती है। स्त्रियों की परछाई से दूर भागने वाले गुरु जी से हंसमुख दे प्रश्न करती हैं कि **"गुरु जी आप अपनी माँ के पेट से निकलकर भी क्या गंगा स्नान करने भागे थे? दूध क्या आप बैल का पीते हैं? धरती भी तो स्त्री जाति है, अब आप उसके सीने पर उपजा अन्न कैसे ग्रहण करते हैं? राजगुरु इस वामा तर्क से आग बबूला हो गए।"2** कार्यरत स्त्रियों के सन्दर्भ में दोहरी जिम्मेदारियाँ सामाजिक दबाव और आत्मनिर्भरता की जटिलता समकालीन यथार्थ के रूप में उभरती हैं। मृणाल पाण्डे की कहानियों में स्त्री घरेलू दायरे से बाहर निकलकर सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता की आकांक्षा व्यक्त करती हैं। किन्तु यह स्वतंत्रता संघर्षों और विरोधाभासों से भरी हुई है। 'उमेश जी' कहानी में महिला जब पहली बार ऑफिस जाती है तो पुरुषों द्वारा उसके साथ जो व्यवहार होता है उसे महिला इस प्रकार व्यक्त करती है **"एक आदमी ने यूँ ही हाथ बढ़ाकर हरिहरन की मेज छूने की ऐसी चतुर कोशिश की, कि आस्तीन मेरी पीठ से रगड़ भी खाते। दूसरा मेरी पीठ से सटकर बेवजह मेरे सिर के ऊपर से हरिहरन की मेज पर चढ़े कागज पढ़ने का नाट्य करता गुनगुनाता रहा – हुँ ऊँ ...ऊँ...ऊँ।"3** पितृसत्तात्मक समाज, पारिवारिक दबाव और सामाजिक उपेक्षाएँ स्त्री के मार्ग में बाधा बनती हैं। यह यथार्थ समकालीन समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है।

मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में परिवार एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में उभरता है किन्तु यह संस्था आदर्श रूप में नहीं, बल्कि टूटन और तनावग्रस्त दिखाई देती है। आधुनिकता, आर्थिक दबाव, व्यक्तिगत महत्वकांक्षाएं और मूल्यगत परिवर्तन पारिवारिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। 'पितृदाय', 'कोहरा और मछलियाँ', 'अंधेरे से अंधेरे तक', 'अब्दुला', 'व्यक्तिगत', 'कौवे', 'लक्का-सुन्नी', 'दूरियाँ' और 'रिक्ति' आदि कहानियों में इन्हीं पारिवारिक यथार्थ को दिखाया गया है। 'पितृदाय' कहानी में पिता-पुत्र सम्बन्धों की असफलता पर प्रकाश डाला गया है। पिता की तबीयत खराब होने पर नायक (पुत्र) परेशान होकर कहता है- **" सात समन्दर पार से मरने को यहीं आना था तुम्हें? जन्म भर मुझे नफ़रत से देखा, फिर मेरे ही मत्थे मरने आये। ठण्डा हुआ जी तुम्हारा मेरा अपमान कराके?..... पहले अपनी ऐंठ से घुला-घुलाकर माँ को मारा, फिर लड़की की गृहस्थी चूस खायी अब मुझे खा लो। मरते भी नहीं कि पिण्ड छूटे हमारा।"4** मृणाल पाण्डे की कहानियों में पारिवारिक यथार्थ परत दर परत खुलता है। यह सम्बन्ध केवल भावनात्मक नहीं बल्कि सत्ता नियंत्रण और अपेक्षाओं से भी जुड़े होते हैं। पति-पत्नी, माता-पिता और संतान के संबंधों में छिपे तनाव सामाजिक संरचना की सच्चाई को उजागर करते हैं। उनकी कहानियों में पारिवारिक नैतिकता अक्सर स्त्री के लिए बंधन बन जाती है, जबकि पुरुष के लिए वही नैतिकता अपेक्षाकृत लचीली दिखाई देती है। पति-पत्नी के संबंधों में संवेदनहीन पीढ़ियों के बीच टकराव और पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ उनकी कहानियों में यथार्थ रूप से चित्रित है। यह पारिवारिक यथार्थ समकालीन समाज की उस स्थिति को दर्शाता है जहाँ पारंपरिक संरचनाएँ बदल रही हैं।

समकालीन यथार्थ का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक और आर्थिक असमानता है। नौकरी की असुरक्षा, आर्थिक निर्भरता, उपभोक्तावादी संस्कृति और वर्गीय भेद उनके पात्रों के जीवन को प्रभावित करते हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता स्त्री के लिए मुक्ति का माध्यम बनती है किन्तु इसके साथ नए सामाजिक व मानसिक दबाव भी जुड़ जाते हैं। 'उमेश जी' कहानी में स्त्री के इसी स्थिति का चित्रण हुआ है- **" उमेश जी से नौकरी माँगने को आने वाली हर लड़की के साथ इस दफ्तर में ऐसा ही जलालत भरा बर्ताव होता होगा, कमाल है फिर भी लड़कियाँ आती हैं, नौकरी माँगने, जैसे कि खुद मैं।"5** उमेश जी जैसे लोगों की संख्या समाज में पर्याप्त मात्रा में है जो यह सोचते हैं कि लड़कियों को रोजगार के नाम पर शोषित किया जा सकता है। यह आर्थिक यथार्थ समाज की वर्गीय संरचना को समझने में सहायक सिद्ध होता है और कथा साहित्य को समकालीन सामाजिक गहराई प्रदान करता है।

मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य राजनीति और सत्ता के प्रभाव से अछूता नहीं है। वे सत्ता की निरंकुशता प्रशासनिक उदासीनता और राजनीतिक अवसरवादिता को उजागर करती है। इनकी कहानियों में प्रशासनिक तंत्र की संवेदनहीनता, संस्थागत भेदभाव और शक्ति संबंध व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। यह प्रस्तुति समकालीन यथार्थ को अधिक विश्वसनीय बनाती है।

परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य का प्रमुख आयाम है। उनके पात्र आधुनिक जीवन मूल्यों को अपनाना चाहते हैं। किन्तु सामाजिक-सांस्कृतिक बंधन उन्हें रोकते हैं। 'एक नीच ट्रैजेडी' नामक कहानी में पीढ़ीगत अन्तराल को दर्शाया गया है। नयी पीढ़ी पुराने थोपे गये आदर्शों और मूल्यों के खिलाफ विद्रोह में उतरती है तो पुरानी पीढ़ी उन्हीं मूल्यवत्ता से चिपकी रहना चाहती है। फलतः संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। अम्मा गुरु गम्भीर स्वर में कहती है **"तोड़ना तो बहुत आसान है, पर मैं पूछती हूँ कि जो यह हमारी यंगर पीढ़ी तोड़े जा रही है उसे रिप्लेस किससे करेगी? यानि की हमारी एक संस्कृति है, एक मर्यादा है।"6** परंपरा और आधुनिकता के बीच चल रहा द्वन्द्व तो **"अब यह पीढ़ियों का टकराव तो एक चक्र सा है।"7** यह द्वन्द्व विशेष रूप से स्त्रीपात्रों के जीवन में तीव्र रूप से दिखाई देते हैं। **'एक नीच ट्रैजेडी', 'कैंसर', 'लकीरें'** आदि कहानियों में इसी समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है।

आधुनिक समाज में बाजार और उपभोक्तावाद का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है उनके पात्र उपभोक्तावादी मानसिकता, दिखावे और भौतिक सुखों की दौड़ में फंसे हुए नज़र आते हैं 'पितृदाय','अन्धेरे से अन्धेरे तक', 'दुर्घटना' आदि कहानियों में इनका वर्णन बखूबी हुआ है। यह बाजारवादी यथार्थ मानवीय संबंधों को भी प्रभावित करता है। संवेदना, नैतिकता और आत्मीयता धीरे-धीरे हाशिए पर चली जाती है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य मानसिक यथार्थ को विशेष महत्व देता है। अकेलापन, असंतोष, पहचान का संकट और आत्मसंघर्ष उनके पात्रों के जीवन में व्याप्त है। 'कर्कशा' कहानी में भग्गों का पति शराबी है काम-काज भी ठीक से नहीं करता जिसके कारण घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। ऐसे में मानसिक तनाव व आत्मपीड़न को झेलती भग्गो चुप नहीं रहती कहती है- **"सुभे हो गयी। पड़े-पड़े सो रहे हैं घर में पानी का नाम नहीं। गर्मी ऐसी ना मुराद है। खुद उठ कर चाय बनानी हो तो पता चले। अभी तो वही लगी है सब के बाप की लौडी।"**[8] 'कगार पर' नामक कहानी में विष्णु अकेलेपन से दुःखी होकर अत्यधिक नशा करने लगता है और अंततः नींद की गोलियों का अत्यधिक सेवन कर अपनी जान दे देता है। अकेलेपन का चित्रण 'धूप-छाँह' और 'समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर' कहानियों में हुआ है। यह मानसिक स्थिति सामाजिक दबावों और बदलती परिस्थितियों की देन है, जो उनके कथा साहित्य को गहन मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करती है। मृणाल पाण्डे का यथार्थ बोध के बल आलोचनात्मक नहीं, बल्कि गहरी मानवीय संवेदना से युक्त है। वे अपने पात्रों के प्रति सहानुभूति रखती हैं और उनके संघर्षों को समझने का प्रयास करती हैं। यही संवेदना उनके कथा साहित्य को निराशावाद से बचाती हैं और उसे मानवीय धरातल पर स्थापित करती हैं। उनका यथार्थ पाठक को सोचने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य विशेष रूप से शहरी मध्यमवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं को उजागर करता है। आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा का दबाव, नैतिक दोहरापन और संबंधों में स्वार्थ- ये सभी तत्व उनके कथा साहित्य में प्रमुख रूप से उपस्थित हैं। मध्यमवर्गीय पात्र बाहरी रूप से संतुलित दिखते हैं किन्तु भीतर से असंतोष और तनाव से ग्रस्त होते हैं। यह आन्तरिक द्वन्द्व समकालीन यथार्थ की एक महत्वपूर्ण पहचान है, जिसे मृणाल पाण्डे अत्यन्त सूक्ष्मता से प्रस्तुत करती है।

मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में नैतिक मूल्यों का संकट एक प्रमुख विषय है। आधुनिक समाज में सफलता, धन और प्रतिष्ठा की होड़ में नैतिक दुविधाओं से जूझते हुए दिखाई देते हैं। क्या सही है और क्या गलत, इसका निर्णय कठिन हो जाता है। यह नैतिक संकट समकालीन यथार्थ की गहरी सच्चाई को सामने लाता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो मृणाल पाण्डे का कथा साहित्य समकालीन भारतीय समाज का विस्तृत, संवेदनशील और आलोचनात्मक दस्तावेज है। उन्होंने अपने कथा लेखन के माध्यम से स्त्री अस्मिता, सामाजिक असमानता, मध्यवर्गीय विडंबनाओं, राजनीतिक हस्तक्षेप और नैतिक संकट जैसे विषयों को गहराई से प्रस्तुत किया है।

उनका यथार्थ बोध मानवीय संवेदना से युक्त है जो उनके कथा साहित्य को विशिष्ट बनाता है। इस प्रकार मृणाल पाण्डे कथा साहित्य में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति को नई ऊँचाई प्रदान करती है और उनकी रचनाएँ भविष्य के साहित्यिक विमर्श के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं।

सन्दर्भ सूची

[1]. पाण्डे, मृणाल: यानि कि एक बात थी (दरम्यान) पृo-30
[2]. पाण्डे, मृणाल: बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (एक थी हंसमुख दे) पृo-50
[3]. पाण्डे, मृणाल: चार दिन की जवानी तेरी (उमेश जी) पृo-31
[4]. पाण्डे, मृणाल: बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (पितृदाय) पृo-30
[5]. पाण्डे, मृणाल: चार दिन की जवानी तेरी (उमेश जी) पृo-35
[6]. पाण्डे, मृणाल: बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (एक नीच ट्रेजडी) पृo-79
[7]. पाण्डे, मृणाल: बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (एक नीच ट्रेजडी) पृo-79
[8]. पाण्डे, मृणाल: बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (कर्कशा) पृo- 212

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पाण्डे, मृणाल: एक स्त्री का विदागीत, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 1985
[2]. पाण्डे, मृणाल: यानि की एक बात थी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
[3]. पाण्डे, मृणाल: बचुली चौकिदारिन की कढ़ी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
[4]. पाण्डेय मृणाल: चार दिन की जवानी तेरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995